Turkish Online Journal of Qualitative Inquiry (TOJQI)
Volume 12, Issue 9, August 2021: 8034-8040

जैन शैली में चित्रित वस्त्रपटों का सांस्कृतिक महत्व

सपना अग्रवाल, पूनम रानी
डिपार्टमेंट ऑफ विजुअल एण्ड परफार्मिंग आर्टस, मंगलायतन विश्वविद्यालय, अलीगढ
Email: tanu.12jan91@gmail.com

संक्षेपण–

प्राचीन समय मेंवस्त्र एक ऐसा माध्यम था, जिसकाप्रयोगसाधुओं एवंकलाकारों द्धाराचित्र–रचना व लेखनकार्य के लियेकियाजाताथा।जिन्हें 'वस्त्र–पट' या 'पट–चित्र' भीकहाजाताहै।वस्त्र का प्रयोगलेखन एवंचित्रण के लियेप्राचीनकाल से हीहोतारहाहै।प्राचीनभारतमें घनीबुनावट का कपड़ाचित्रण तथालेखन के लियेप्रचलितआधार–तलरहाहैं।

'संयुक्तनिकाय' एवंअनेकसंस्कृतग्रंथोंमेंकपड़ेपरचित्रण के उल्लेख मिलतेहैं।इनअसंख्य संदर्भों के होतेहुए भीचौदहवीं शताब्दी से पूर्व का कोईसाक्ष्य चित्रित पटअबतकप्राप्तनहींहुआहै,संभवतः वेमुसलमानों द्वारानष्टकरदियेगये या कपड़े की नष्वरप्रकृति के कारणसमाप्तहोगये।परंतुचित्रण व लेखनके लिए ताड़पत्र का स्थानकागज द्वारालिए जाने से पूर्व की अवधिमेंनिर्मितपट–चित्रों के अनेकप्रमाणउपलब्धहुए हैं।इस समय मेंचित्रण के लिए कपड़े की पट्टीका प्रयोगहोताथा,जिसेचौड़ाईमेंगोलकियाजाताथा।कपड़े परचित्रण से पूर्वगेंहूअथवाचावल के आटेकोपकाकरउसके घोल का अस्तरलगायाजाताथाऔरअस्तर के सूख जानेपर इस कपड़ेको एगेटपत्थर के घोटे से घोटकरतैयारकियाजाताथा।अपभ्रंष शैलीमेंकपड़ेपरचित्रण का यह विधानसर्वत्र प्रचलितथा, जैनआगमोंमेंइसकेअनेकउल्लेख देखनेकोमिलते हैं।[1] यह वस्त्र–पटचित्रकला के उत्कृष्ठ नमूनेहैंजिनमेंकलाकार ने धार्मिक व सांस्कृतिकविषयोंकोविशेषतल्लीनता के साथचित्रित कियाहै । इनवस्त्र–पटों के अनेकउदाहरणआजभारत के प्रमुख संग्रहालयोंमेंसुरक्षितहैं।जिनपरअंकित की गईआकृतियां व अलंकृतसज्जाउच्चश्रेणीं की कला की परिचायकहै।

मुख्य शब्दावली– *जैनआगम,वस्त्र–पट,समवसरण, कासमोग्राफिक्सचार्ट, जम्बूद्वीप, नवद्वीप, अढ़ाईद्वीप, द्वीपसमुद्रों, ह्यंकार, घंटाकरण, लोकतत्त्व, पंचतीर्थ।*

शोध लेख–

जैन शैलीमेंनिर्मितअनेकवस्त्र–पटअबतकप्रकाशमेंआचुकेहैं, जिनपरजैनतीर्थकरों, मुनियोंतथा धार्मिककथाओं से संबंधितअत्यंतसुंदर एवंपाण्डुलिपिचित्रण से भिन्नबड़ेआकारमेंकलात्मकअंकन देखनेकोमिलताहै।जैन शैलीमेंपुस्तक–ग्रंथों के साथ–साथमंत्र–तंत्र आदि के पटों की तरहभौगोलिकवस्त्र पट्टभीनिरन्तर बनते रहेहैं, जिनमेंसमवसरण, कासमोग्राफिक्सचार्ट, जम्बूद्वीप, नवद्वीप, अढ़ाईद्वीप, द्वीपसमुद्रों, ह्यंकार, घंटाकरण, लोकतत्त्व, पंचतीर्थीतथा 14 राजलोक के मनुष्याकार के पटविशेष रूप से उल्लेखनीय हैं,जिनमें से कईपटोंकोबहुतबड़ा–बड़ाबनायागयाहै।इनके अतिरिक्तदेवलोक, मनुष्य लोक, नर्कलोकके साथ–साथपशु–पक्षियों, जलचरों,

देवताओंऔरदेवविमानोंआदि के भीअनेकछोटे–छोटेचित्र पायेजातेहैं।जैनभौगोलिकमान्यताओं के संबंध मेंजानकारीप्रदानकरनेमें ये चित्र अत्यंतमहत्वपूर्णसाक्ष्य प्रमाणहैं।बीकानेर के बड़ेज्ञानभण्डारतथाअन्य राजस्थान के जैनभण्डारोंमेंबड़ी संख्या मेंसचित्र वस्त्र पटसंग्रहितहैं, जिनकीविषय–वस्तु एवंरंगोंमेंभिन्नतादृष्टव्य है।[2]

इनपटचित्रोंमेंजैन शैली के कृतित्वपूर्णअंकनों का विकासदेखनेकोमिलताहै।पाण्डुलिपिचित्रण मेंआकार की सीमाओं के कारणचित्रकारबंधाथा, परंतु यहाँ ये सीमायेंसमाप्तहोगयींहैं।इसीकारणवस्त्रोंकोबड़ेआकार का बनायागया,जिसमेंआकृतियों के आकारमेंकोई बंधननहींरहाऔरवेअत्यंतमार्मिक एवंसजग बन सकीं।

जैनवस्त्रपटोंपरआकृतिचित्रण

जैनवस्त्र–पटोंपरचित्रित आकृतिअंकन का एक प्रमुख उदाहरणचिन्तामणिनामकवस्त्र–पटहैजोअगरचंद्रनाहटा के संग्रहमेंसंग्रहितहै। 1354 ई0 (वि0सं0 1411) का बना ये पटसाढ़े उन्नीस इंच लम्बातथासाढ़े सत्तरह इंच चौड़ाहै। इस पटमेंचौरी–वाहकों के अतिरिक्तपद्मासनपार्श्वनाथ व उनके यक्ष–यक्षिणी धरणेन्द्रपद्मावती का चित्रण देखा जासकता है।[3]इसमेंसकेन्द्रीय तांत्रिक वृत्तों के बीचपार्श्वनाथसिंहासनपरविराजमानहैंतथाधरणेन्द्र व पद्मावती उनकेआस–पासचंवरीलियेहुयेचित्रित हैं।ऊपर,दाहिनेतरफपार्श्वनाथ का यक्ष व बायींतरफवैरोढ्या देवीचित्रित हैंजिनकेबीचमेंदोगन्धर्वों काभीअंकनहैं।नीचे, दाहिनेभागमें तरुणप्रभाचार्य के उनके दो शिष्यों के साथचित्रण हैतथाबायींतरफके भागमेंदोअन्य शिष्योंकोचित्रित कियागयाहै।वृत्त के बाहरदोचंवरीधारकों का भीअंकनहै। इस पटमेंतरुणप्रभाचार्यकेअंकन से प्रतीतहोताहैकि यह चित्र उनके जीवन कालमेंहीबना होगा।[4]

इसीप्रकार, श्रीसाराभाईनवाब के संग्रहमेंसंग्रहित एकमंत्र–पटमेंभीआकृतियों का विषिष्टअंकन देखा जासकताहै इसपटमेंमहावीर के प्रधानगणधरगौतमस्वामीकोकमलासनपरविराजमानदर्षायागयाहै, जिनकेदोनोंओरमुनिस्थितहैं।मण्डल के बाहरअश्वारूढ़ कालीतथाभैरव एवं धरणेन्द्रऔरपद्मावती के चित्र अंकितकियेगयेहैं। इस चित्रपट का निर्माण वि0 सं0 1412 मेंभावदेवसूरि के लिए कियागया था।[5]

1425 ई0 मेंदिलवाड़ा, राजस्थानमेंसूतीकपड़ेपरटेम्परारंगों से चित्रित एकपंचागुली यंत्र चित्र भीप्राप्तहुआहैजोआकृतिचित्रण का अच्छाउदाहरणहै।इसमेंश्रीमंदिरास्वामीअधिष्ठात्री देवी (जिन्हें पंचागुलीदेवीभीकहाजाता है) एवंपाँचअराधकों का चित्रण है।इस यंत्र चित्र के पीछेदोअभिलेख हैं।छोटाअभिलेख देवनागरी लिपि में व बड़ाअभिलेख गुजरातीमेंलिखा गया है[6](चित्र सं0 – 1)।

चित्र सं0 – 1

पंचागुली यंत्र चित्रांकन, 1425 ई0

सूतीकपड़ेपरटम्परारंगों से चित्रित, दिलवाड़ा (राजस्थान)

चित्र सं0 – 2

पंचतीर्थीपट का आंषिकभाग

गुजरातमेंकपड़ेपरचित्रण, 1433 ई0,

लालभाईदलपतभाईम्यूज़ियम, अहमदाबाद

1433 ई०मेंवस्त्र परचित्रित एक 'जैनपंचतीर्थीपट' एल०डी०इन्स्टीट्यूटऑफइण्डोलॉजी, अहमदाबादमेंसंग्रहितहै। इस पटमें शत्रुंजय तीर्थपर्वतपर चढ़तेउतरतेथकेहुए यात्रियों व मुनियोंआदि के साथ–साथमार्ग व धार्मिकस्थानके अन्य दृश्योंकोमार्मिकढंग से प्रस्तुतकियागया है।[7]यह चित्र 30फुट लंबा और32 इंच चौड़ा है।[8]वस्त्र परचित्रित एक अन्य महत्वपूर्णचित्र 1450 ई0 मेंनिर्मित 'सरस्वतीपट'है।जोसंभवतः पाटन, गुजरातमेंनिर्मितहुआ,[9]राष्ट्रीय संग्रहायल, नईदिल्लीमेंसंग्रहितहै।इसमेंआकृतियों की गतिशीलता व छन्दमय भंगिमाएंविशेष रूप से उल्लेखनीय हैं[10](चित्र सं0 –2)।

उपरोक्तवस्त्रपटों के अतिरिक्त एक विषेषमहत्व की 'बसंतविलास' नामकसंस्कृत–गुजरातीमिश्रितकाव्यपत्री भीगुजरात से प्राप्तहुयीहै।सम्प्रतिवाशिंगटन की 'फ्रियरआर्टगैलरी' मेंसंग्रहित ये पत्री गुजरात के शासक 'अहमदशाहकुतुबउद्दीन' के समय की है, जोकि1924 ई0 में'श्रीनानालालचमनलालमेहता'कोगुजरात के आचार्यकेशवलाल, हर्षदराय द्वाराअहमदाबादमेंप्राप्तहुईथी।यह पत्री जन्मपत्रीनुमा या कुण्डलीनुमालंबेकपड़ेपरलिखीगईपट्टीहै, जिसकेचित्रउल्लेखनीयहैं।इसकानिर्माणसमतलकपड़े की 9.15 इंच चौड़ीऔर436इंच लंबीपट्टीपरहुआ है।[11]सन् 1451 ई०मेंअहमदाबादमेंनिर्मित ये पत्री प्राचीनगुजरातीफागुहै,जिसमेंबसंत की श्रृंगारिकअनुभूतियाँ हैं।इसमेंबसंत केउल्लासमय वातावरणकोदर्षानेहेतुझूमतेहुए वृक्ष, लताएं, उमड़तेहुए बादल, हर्षमय पशु–पक्षी, नायक–नायिकायेंआदि का मार्मिकअंकनकियागया है।[12]जिसकीकलात्मक शैलीपरंपरागतजैन शैली व आगामीराजस्थानी शैलीकोजोड़तीहै।अतः कह सकतेहैंकिजैनचित्रशैली की परिधिमेंहीसमयानुसारमहत्वपूर्णपरिवर्तनहुएहैंजिसने एक नयी शैलीकोजन्मदिया।इस प्रति का निर्माणआचार्यरत्नागर ने शाहदेपाल के पुत्र शाहश्रीचन्द्रपाल के आदेश से कियाहै, इस पत्री मेंमूलतः 84 चित्र थेकिन्तुअब मात्र 79 हीशेषहैं।डा०नार्मनब्राऊन ने इनचित्रोंकोतीनभागोंमेंविभक्तकियाहै, जिसमेंउनके अनुसारप्रथमव द्वितीय वर्ग के चित्रों का अंकन एक हीकलाकारद्वाराकियागयाहै।प्रथमभाग के चित्रों कीरेखाओंमेंगति एवंसरसता का सामंजस्य हैतथादूसरेभाग के चित्रोंमेंपीतपृष्ठभूमि के साथ मात्र उद्यानोंकोहीचित्रित कियागयाहै।तीसरेभाग के चित्रोंकोपरम्परागतनुसारबनायागयाहैइसकेचित्रोंमें एक आकृतिकोछोड़करसभी के पीछेप्रभामण्डल का अंकनहै।बसंतविलास के चित्रोंमें स्त्री आकृतियों का अंकनकुछ इस प्रकार का हैकिवेहवामेंविहारकरतीहुयीप्रतीतहोतीहैं। यहाँ स्त्रियोंकोलम्बी व छरहरेबदन से युक्तकोमलभंगिमाओंमेंअंकितकियागयाहै, परंतुइनकोमलभंगिमाओंकोपरम्परागतजैनचित्रों के समकक्ष नहींमानाजासकता। यहाँ अंकितआकृतियोंकोविभिन्नमुद्राओंतथाभंगिमाओं के साथदर्षायागयाहैपरंतुफिरभीइनमेंसमरसता का अभावहै।इनचित्रोंमेंकहींपरस्त्री कोप्रेमीकी यादमेंलेटकरस्वप्न देखतेहुये,तोकहींपरअपनेविरहव्यथाकोकोयल, भ्रमरों व कौवे से कहतेहुयेचित्रित कियागयाहै।यहाँ संयोग व श्रृंगार के चित्रोंमेंप्रेमी एवंप्रेमिका के आमोद–प्रमोद के विषय कोप्रस्तुतकियागयाहै।अन्य चित्रोंमेंकहींपरनायिकाकोचकितहोकरहिरण एवं हिरणी को देखतेहुए, तोकहींपरसिंहकोहिरण का पीछाकरतेहुए चित्रित कियागयाहै।जिसमेंअद्भुतगति का चित्रण है, जोसंभवतः किसीनिपुणचित्रकार की रचना है[13](चित्र सं0 – 3)।

चित्र सं0 – 3

बसंतविलासपटपत्री के आंशिक दृश्य, 1451 ई0

फ्रीयरगैलरीऑफआर्ट, वाशिंगटन डी0सी0

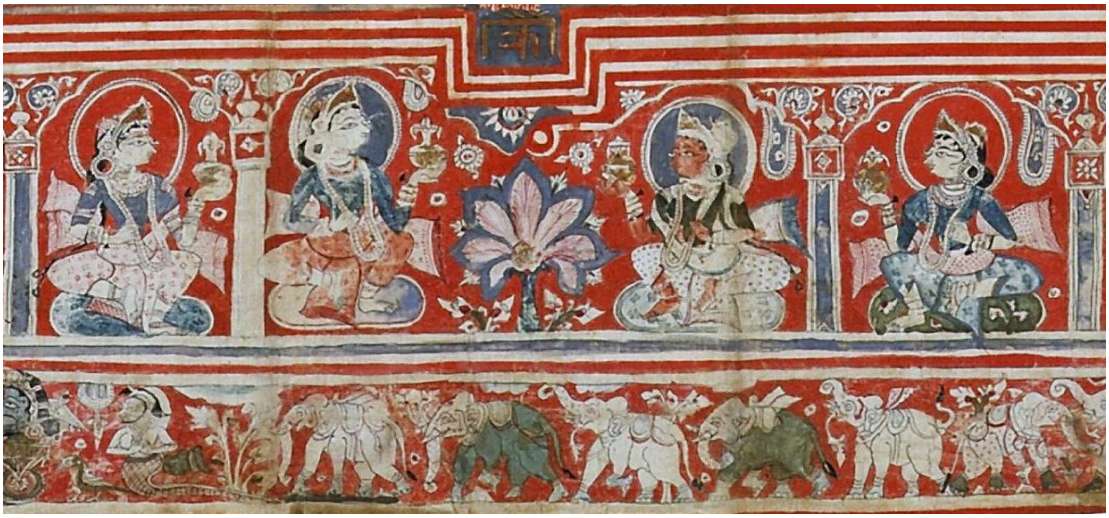

चित्र सं0 – 4

विजय यंत्र का आंशिकभाग, 1447 ई0

137×110 बउए, विक्टोरिया एण्ड अल्बर्टम्यूज़ियम, लंदन

1447 ई0 (वि0 सं० 1504) मेंनिर्मित एकविजय यंत्र नामकपटविक्टोरिया एण्ड अलबर्टम्यूजियम, लन्दनमेंसंग्रहितहै। इस पटमेंजैनधर्ममेंस्वीकृत ब्राह्मणधर्मीय देवताओं–ब्रह्मा, शिव, विष्णु, गणेषआदिके चित्र हैं।यहाँ देवताओंको उनके रूप–विधान के

अनुसारअलग–अलगबनायागयाहै। इस पटमेंदेवताओंका चित्रण पतले खम्भेजैसेमेहराबोंमेंकियागयाहैजोबहुतहीअलंकारिकप्रतीतहोता है[14](चित्र सं0 – 4)।

डॉ0 कुमारस्वामी के संग्रह का एक जैनवस्त्र–पटऔरप्राप्तहुआहै, जो उनके अनुसार16वीं शताब्दी का है। इस पटमेंपार्श्वनाथ के समवसरण का चित्रणहै, जिसमेंवामपार्श्वमेंअंकितपार्श्वनाथके दोनोंतरफ यक्ष–यक्षणियाँ बनायीगयीहैं।इसकेसाथ–साथओंकार की पाँचआकृतियाँ, चन्द्रकला की आकृतिपरआसीनपाँचसिद्ध व सुधर्मास्वामीऔरनवग्रहों के दृष्यों का अंकनहै।पट के मध्य मेंध्वजायुक्तव शिखरबद्ध मंदिरमेंपार्श्वनाथ की प्रतिमाविराजमानचित्रित की गईहै, यह मंदिर शत्रुंजय का हैऔरपाँचसिद्ध मूर्तियाँ शत्रुंजय से मोक्ष प्राप्तकरनेवालेपाँचपाण्डवों की हैं।[15]

निष्कर्ष–

प्रस्तुतशोध द्वाराउल्लिखितप्रारंभिकपट–चित्रोंतथाबाद के पट–चित्रों के सन्दर्भों से हमें यह संकेतमिलताहैकिभारतमेंकपड़ेपरचित्रण व लेखनका कार्यप्राचीन समय से प्रचलितरूप से कियाजातारहाहै।जैन शैलीमेंचित्रित वस्त्रपटअधिकांशतः धार्मिकभावना से प्रेरितहोकरबनायेगयेहैंजिनमेंजैनतीर्थंकरों, हिन्दूदेवी–देवताओं, जैनमुनि एवं षिष्योंआदि का चित्रण प्रमुखता से कियागयाहै।

इसकेसाथ–साथमंत्रपटोंकोभीविषेष रूप से बनायागया,सम्भवतः उपासना व सिद्धि प्राप्तिकरने के उद्देष्य से इनकानिर्माणकियाजाताथा।इसीलियेअनेकमंत्रपटअबतकप्राप्तहोचुकेहैंऔरअबभी बन रहेहैं।परंतुकुछवस्त्रपटजैनशैली की धार्मिकविषय–वस्तु से हटकरभीनिर्मितहुए हैं, उदाहरणार्थ– 'बसंतविलास'। इस प्रकार के पटव्यापक रूपमेंप्राप्तनहींहुयेहैं, परंतुफिरभीकला की दृष्टिके अतिरिक्त यह वस्त्र–पटजैनसांस्कृतिक की मूल धरोहराहैं।अतः स्पष्टहैकिकपड़ों के पटोंपर इस प्रकार के चित्रों के निर्माण की एक लंबी, अविच्छिन्नऔरक्रमबद्ध परंपराप्राचीन समय से चलीआरहीहै। शैलीगतआधारपरभी यह वस्त्र–पटपूर्णतः नवीनतालियेहुयेऔरअग्रगामीचित्रकला शैलियों के लियेमार्गप्रशस्तकरनेवालेरहेहैं।

सन्दर्भसूची :

1. श्रोत्रिय, शुकदेवः भारतीय चित्रकला शोध–संचय, चित्रायनप्रकाशन, मुजफ्फरनगर;1997; पृ0 सं0 –98
2. जैन, राजेशः मध्यकालीनराजस्थानमेंजैन धर्म; पार्श्वनाथविद्याश्रम शोध संस्थान, वाराणसी; 1991–92; पृ0 सं0 – 284, 285
3. जैन, हीरालालः भारतीय संस्कृतिमेंजैन धर्मका योगदान; मध्यप्रदेश शासनसाहित्य परिषद्, भोपाल; 1975; पृ0 सं0 –375
4. जैन, राजेशः मध्यकालीनराजस्थानमेंजैन धर्म; पार्श्वनाथविद्याश्रम शोध संस्थान, वाराणसी; 1991–92; पृ0 सं0 – 279
5. जैन, हीरालालः भारतीय संस्कृतिमेंजैन धर्मका योगदान; मध्यप्रदेश शासनसाहित्य परिषद्, भोपाल; 1975; पृ0 सं0 –375
6. पाल, प्रतापादित्यःइंडियनपेंण्टिग; लॉस एंजेलिसकाउण्टीम्यूज़ियम ऑफआर्ट, केलिफॉर्निया; वॉल्यूम–1;1993; पृ0 सं0 – 92
7. कुमार, शैलेन्द्रःउत्तरभारतीय पोथीचित्रकला; कलाप्रकाशन; 2009; पृ0 सं0 –61
8. गर्ग,कमलाः यशोधरचरित; सचित्र पाण्डुलिपियाँ; भारतीय ज्ञानपीठ, नईदिल्ली; पृ0 सं0 –20
9. आंद्रे, एस0 के0; भोजका, लक्ष्मणभाईहीरालाल : जैनवस्त्रपटाज़ (जैन पेंण्टिग्सऑनक्लॉथ एंड पेपर); 2015; लालभाईदलपतभाईइंस्टीट्यूटऑफइंडोलॉजी, अहमदाबाद; पृ0 सं0 – 94, 95
10. कुमार, शैलेन्द्रः उत्तरभारतीय पोथीचित्रकला; कलाप्रकाशन; 2009; पृ0 सं0 – 59
11. प्रताप, रीताः भारतीय चित्रकला एवंमूर्तिकला का इतिहास;राजस्थानहिन्दीग्रन्थअकादमी, जयपुर; 2016; पृ0 सं0 –113

12. कुमार, शैलेन्द्रः उत्तरभारतीय पोथीचित्रकला; कलाप्रकाशन; 2009; पृ0 सं0 – 61

13. कुमार, शैलेन्द्रः उत्तरभारतीय पोथीचित्रकला; कलाप्रकाशन;2009पृ0 सं0 – 73 से 76 तक।

14. कुमार, शैलेन्द्रः उत्तरभारतीय पोथीचित्रकला; कलाप्रकाशन; 2009पृ0 सं0 – 101

15. जैन, हीरालाल : भारतीय संस्कृतिमेंजैन धर्मका योगदान; मध्यप्रदेश शासनसाहित्य परिषद्, भोपाल; 1975; पृ0 सं0 –376